लिखित

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न(क) दुस्साहसी व्यक्ति को किस प्रकार झुकाया जा सकता है?

उत्तर- दुस्साहसी व्यक्ति को प्यार भरी आँखों से झुकाया जा सकता है।

प्रश्न(ख)- प्यार से किसे भरा जा सकता है?

उत्तर- प्यार से किसी भी गहरे गर्त को भरा जा सकता है।

प्रश्न(ग)- किसको अपने हृदय का स्नेह देने की बात कही गई है?

उत्तर- जो गलत राह पर चला गया है, दुस्साहसी हो गया है तथा जो वंचित है, उसी को अपने हृदय का स्नेह देने की बात कही गई है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न(क) - कवि किसके लिए बेचैन हो उठता है?

उत्तर- कवि वंचितो, दीन-दुखी एवं सर्वहारा लोगों के साथ उन लोगों के लिए भी बेचैन हो उठता है जो किसी कारण वश पथभ्रष्ट हो गए हैं, गलत रास्ते पर चल पड़े हैं।

प्रश्न (ख) - कविता में कवि ने किस बात पर अधिक जोर दिया है?

उत्तर- कविता में कवि ने हर समस्या के समाधान हेतु, पथभ्रष्ट को सही मार्ग पर लाने के लिए तथा वंचितों दीन-दुखी को सुखी बनाने के लिए स्नेह तथा प्रेमपूर्वक व्यवहार पर जोर दिया है।

4) देखो से प्यार भरी - - - - - - तुम देखो।

प्रसंग - प्रस्तुत काव्यांश हमारे पाठ्य पुस्तक परिवेश के 'स्नेह शपथ' कविता से उद्धृत है। जिनके कवि श्री भवानी प्रसाद मिश्र जी है। इन पंक्तियों में कवि कह रहे है कि प्रेम पूर्ण व्यवहार द्वारा पथभ्रष्ट तथा कठोर हृदय वाले व्यक्ति व्यक्ति के हृदय को द्रवित किया जा सकता है।

भावार्थ - कवि कह रहे है कि प्रेमपूर्वक व्यवहार तथा मीठे वचनों से कठोर हृदय वाले पथभ्रष्ट व्यक्ति के हृदय को द्रवित किया जा सकता है जिससे उसे पश्चाताप होता कि वह गलत राह पर चल रहा है तथा नैतिक राह की ओर आगे बढ़ने की कोशिश करता है।

5) है शपथ तुम्हें - - - - - - - देकर तुम देखो।

प्रसंग - प्रस्तुत कवितांश हमारे पाठ्य पुस्तक 'परिवेश' के 'स्नेह शपथ' कविता से उद्धृत है। जिसके कवि श्री भवानी प्रसाद मिश्र जी हैं। इन पंक्तियों में कवि मनुष्य से सभी के साथ स्नेहपूर्ण, प्रेमपूर्वक व्यवहार करने की शपथ लेने की प्रेरणा दे रहे है।

भावार्थ - कवि कह रहे है कि हे मनुष्य! तुम्हे परमात्मा या ईश्वर की सौगंध है, शपथ है उन गरीब, दीन-हीन-दुखी लोगों की जो स्नेह, प्रेम से वंचित है कि तुम अपने अंतरात्मा में छिपे प्रेम, स्नेह द्वारा सभी समस्याओं को सुलझाओगे, कभी भी कटु या कठोर वचनो का प्रयोग नही करोगे तथा सभी के साथ प्रेम का, स्नेह का व्यवहार करोगे।

प्रश्नोत्तर

मौखिक

प्र(क) पहले पद्यांश में कवि जिह्वा को क्या भूल करने से रोक रहा है?

उत्तर - कवि जिह्वा को किसी भी सख्त बात, कटुवचन, कठोर शब्द कहने की भूल करने से रोक रहा है।

प्र(ख) - कवि किस जतन को प्यारा कह रहा है?

उत्तर - कवि गिरे हुए को उठाने के जतन को प्यारा कह रहा है।

प्र(ग) कवि किस प्रकार से काम लेने की बात कहता है?

उत्तर - कवि स्नेह से काम लेने की बात कहते है।

प्र(घ) कवि करुणाकर तथा भिखमंगों की शपथ लेने को क्यों कह रहा है?

उत्तर कवि करुणाकर तथा भिखमंगो की शपथ लेने को कह रहा है ~~क्योंकि~~ जिससे हर समस्या, हर कठिनाई का समाधान स्नेह तथा प्रेमपूर्वक कर सके।

स्नेह शपथ

- श्रीभवानीप्रसाद मिश्र

① हो मित्र ------ हो न भूल।

प्रसंग - प्रस्तुत पद्यांश हमारे पाठ्य पुस्तक 'परिवेश' के 'स्नेह शपथ' नामक पद्य से उद्धृत है। इसके रचयिता श्री भवानी प्रसाद मिश्र जी है। इन पंक्तियों में कवि ने सभी से प्रेमपूर्वक व्यवहार करने की तथा प्रेमपूर्ण मृदु भाषा के महत्व का प्रतिपादन किया है।

भावार्थ - कवि कह रहे हैं कि कोई तुम्हारा दोस्त हो या दुश्मन, परिचित हो या अपरिचित, कोई धनवान, प्रभावशाली या दीन-दुखी गरीब यदि किसी परिस्थितिवश कोई व्यक्ति गलत काम करता है जिससे उसके सम्मान, आत्मसम्मान, प्रतिष्ठा को ठेस पहुँचती है तो हे मनुष्य उस व्यक्ति के प्रति कभी कोई कटु शब्द, कठोर वाणी तुम्हारे मुख से नही निकलनी चाहिए अर्थात उसके प्रति तुम्हारा व्यवहार प्रेम पूर्वक तथा वाणी स्नेह से युक्त होना चाहिए।

② मत कहो कि ---------- तो देकर देखो।

प्रसंग - प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'परिवेश' के स्नेह शपथ नामक कविता से उद्धृत है इसके रचयिता श्री भवानी प्रसाद मिश्र जी है। इन पंक्तियों मे कवि पथभ्रष्ट व्यक्ति के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करने का संदेश दिया है।

भावार्थ - कवि कह रहे हैं कि यदि कोई व्यक्ति किसी कारण वश गलत राह पर चल पड़ा है, पथ से भ्रष्ट होकर अनैतिक, बुरे काम करने लगा हैं तो यह कभी नहीं कहना चाहिए कि अरे वह तो ऐसा ही बुरा था, और बहुत से लोग भी जानते है कि वह बहुत बुरा है। इस तरह के कटु वचन, कठोर शब्द उसके लिए न बोले, बल्कि अपने अंतरात्मा, अपने मन मे छिपे स्नेह, प्यार द्वारा काम ले और उससे प्रेमपूर्वक व्यवहार करो।

③ कितने भी गहरे ------- कुछ पतन नही।

प्रसंग - प्रस्तुत कवितांश हमारे पाठ्य पुस्तक परिवेश के 'स्नेह शपथ' कविता, जिसके रचयिता भवानी प्रसाद मिश्र जी है, से उद्धृत है। इन पंक्तियों मे कवि स्पष्ट किया है कि प्रेम तथा सद्व्यवहार द्वारा हर समस्या को मिटाया जा सकता है।

भावार्थ - कवि कह रहे है कि प्रेम तथा स्नेह पूर्ण व्यवहार द्वारा सभी समस्याओं के खाई के भरा जा सकता है। दुनिया कितनी बुरी क्यों न हो जाए किंतु प्रेम तथा स्नेह द्वारा उसे सँवारा जा सकता है। प्रेम के द्वारा ही नकारात्मकता को दूर किया जा सकता है। पथभ्रष्ट व्यक्ति को प्रेम तथा स्नेह द्वारा नैतिक मार्ग पर लाया जा सकता है। संसार में ऐसी कोई समस्या, अवनति नही जिसे प्रेम तथा स्नेह द्वारा सुलझाया न जा सके तथा उन्नति न किया जा सके। अतः प्रेम तथा स्नेह पूर्वक व्यवहार द्वारा हर असंभव को संभव बनाया जा सकता है।